ISSN 2249-829X

संस्कृति-सौरभम् शोध पत्रिका

प्रकाशक

संस्कार-भारती मानव कल्याण संस्थान जयपुर (राज.)

बी-23, भूरापटेल नगर, पोस्ट-हीरापुरा, अजमेर रोड़, जयपुर (राज.) 302021

E-mail : sanskritisaurabham@gmail.com, sbmksj2001@gmail.com

Scanned with CamScanner

प्रकाशन वर्ष जनवरी–जून 2019
अंङ्क – त्रयोदश

RNI No. RAJBIL/2013/49485
Reg. No. - ISSN 2249-829X

संस्कृति–सौरभम् शोध पत्रिका

(National Research Journal)

अर्द्धवार्षिक पत्रिका

(हिन्दी, संस्कृत एवं अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित लेख)

संरक्षक
प्रो. मोहनलाल शर्मा
पूर्व व्याकरणविभागाध्यक्ष
राज. महा. आ. संस्कृत कॉलेज, गाँधीनगर, जयपुर
(राज.)

प्रधान–सम्पादक
डॉ. एल.एन. शास्त्री
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष (न्यायदर्शन –विभाग)
राजकीय महाराजा आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, गाँधीनगर, जयपुर

सम्पादक एवं निदेशक (वित्त)
रवि शर्मा
(संस्कृति सौरभम्, शोध पत्रिका)

सहसम्पादक
डॉ.शशि मोरोलिया
उप–कुलपति
जे.जे.टी. विश्वविद्यालय, चुड़ैला, झुंझुनू

निदेशक
श्रीमती सुधा शर्मा
संस्कृति सौरभम्, शोध पत्रिका
जयपुर (राज.)

समन्वयक
डॉ. सूरजमल राव
उपकुल सचिव, (शोध)
महर्षि दयानन्द सरस्वती
विश्वविद्यालय, अजमेर

प्रकाशक
संस्कार–भारती मानव कल्याण संस्थान जयपुर (राज.)
बी–23, भूरा पटेल नगर, पो. हीरापुरा, अजमेर रोड, जयपुर–302021
दूरभाष : +91–9414228995, 9929358713, 9414074305
E-mail : sanskritisaurabham@gmail.com, sbmksj2001@gmail.com
सदस्यताशुल्क –पञ्चवर्षीय 1300/– रु. स्थायी शुल्क 2100/– रु. उक्त राशि निदेशक – संस्कृति सौरभम् शोध पत्रिका के नाम नगद/चैक/ड्राफ्ट द्वारा प्रेषित करें। पत्रिका का खाता पंजाब नेशनल बैंक, न्यू सांगानेर रोड, सोडाला शाखा, जयपुर खाता सं. **4087000100105336** एवं **IFSC Cod PUNB0408700** है।

Scanned with CamScanner

रघुवंश में नदी वंश परम्परा

महाकवि कालिदास प्रकृति के चितेरे कवि है । प्रकृति से उन्हें असीम प्रेम है । उन्होंने अपने सभी काव्यों में नदी, पर्वत, वृक्ष, प्रकृति के जितने भी उपादान है उनका स्वाभाविक वर्णन किया है । सभी काव्यों में प्रायशः सभी नदियों का वर्णन यत्र-तत्र सर्वत्र दृष्टिगोचर है ।

रघुवंशम् महाकाव्य में महाकवि कालिदास ने निम्नलिखित नदियों का वर्णन किया है । इससे यह भी ज्ञात होता है कि महाकवि कालिदास नदी प्रिय कवि है ।

गंगा नदी – रघु की सेना का प्रारम्भिक प्रयाण-मार्ग पूर्व सागर - गामिनी गंगा की धरा के साथ-साथ प्राची दिशा की ओर जाता है–

स सेनां महती कर्षन्पूर्वसागरगामिनीम् ।
बभौ हरजटाभ्रष्टां गङ्गामिव भागीरथः ।।[1]

महाकवि द्वारा गंगा नदी के जल के शीतल कणों को लेकर बहने वाले वायु के द्वारा रास्ते में रघु की सेवा किये जाने का वर्णन किया है ।

कपिशा नदी – कपिशा नदी को सैन्य-गज-विनिर्मित सेतु से पार करके उत्कल वासियों द्वारा दिखाए हुए मार्ग का अनुसरण करते हुए हुए सेना के कलिंग पहुँचने का वर्णन महाकवि ने किया है –

स तीर्त्वा कपिशां सन्यैर्वद्धाद्विरदसेतुभिः ।
उत्कलादार्शितपथः कलिङ्गाभिमुखो ययौ ।।[2]

कावेरी नदी– महाकवि कालिदास ने रघु सेना के जल विहार का उल्लेख किया है–

स सैन्यपरिभोगेण गजदानसुगन्धिना ।
कावेरी सरितां पत्युः शङ्कनीयामिवाकरोत् ।।[3]

---

1. रघुशंवम् - 4/32
2. रघुशंवम् - 4/38
3 रघुशंवम् - ४/५५

Scanned with CamScanner

दक्षिण भारत की सम्मान्य पवित्र नदी कावेरी के सागर में सम्मिलन का महाकवि ने उल्लेख कि है।

मुरला नदी – महाकवि ने मुरला नदी के वायु से उड़े केतक पुष्प के पराग कणों को सैनिकों वस्त्र वासक के रूप में वर्णन किया है –

मुरलामारूतोद्धूतममत्कैतकं रज: ।
तद्योधवारबाणामयत्नपटवासताम् ।।[1]

नर्मदा नदी – महाकवि ने धूल धूसरित पताका वाली, क्लान्त अज सेना के नर्मदा तट पर पडा का उल्लेख किया है । जो नर्मदा से अयोध्या की पर्याप्त दूरी का सूचक है ।

स नर्मदारोधसि सीकरादैर्मरूद्भिरानर्तितनक्तमाले ।
निवेशयामास विलङ्घिताध्वा क्लान्त रजोधूसरकेतु सैन्यम् ।।[2]

शिप्रा नदी – महाकवि कालिदास ने उज्जयिनी के शिप्रा नदी के तरङ्गों से शीतल वायु व उल्लेख किया है–

अनेनयूना सह पाथिवेन रम्भारुकच्चिन्मनसो रूचिस्ते ।
सिप्तातरङ्गानिलकम्पितासु विहर्तुमुद्यानपरम्परासु ।।[3]

यमुना नदी – जब विहार करते समय मथुरा नरेश सुषेण की रानियों के स्तनों पर लगा हुआ श्वे चन्दन घुलकर जब युमना के जल में मिल जाता है तब मथुरा में यमुना जी का रुप ऐसा मालुम पड़ता है मा वही पर उनका गंगाजी की लहरों से संगम हो रहा है –

यस्यावरोधस्तनचन्दनां प्रक्षालनाद्वारिविहारकाले ।
कलिन्दकन्या मथुरां गतापि गङ्गोर्मिसंक्त जलेव भाति ।।४

---

1. रघुशंवम् - ५/४२
2. रघुशंवम् - ६/३५
3. रघुशंवम् - ६/४८

Scanned with CamScanner

तमसा नदी – महाकवि कालिदास ने तमसा नदी के जल को पवित्र बताया है, जिसमें तपस्वी लोग स्नान करते हैं –

अथ जातुरूरोगृहीतवर्त्मा विपिने पार्श्वचरैरलक्ष्यमाणः ।
श्रमकेनमुचा तपास्विगाढां प्राय नदी तुरङ्गमेण ।।[1]

गोदावरी नदी – रावण वध के अनन्तर विमान से वापिस आते राम-सीता के विमान की स्वर्णिम घण्टियों की ध्वनि को अपने किसी समूह का शब्द समझ कर आकाश की ओर उड़ती, गोदावरी नदी की सारस श्रेणियाँ मानो सीता का स्वागत कर रही है –

अमूर्विमानान्तरलम्बिनीनां श्रुत्वा.स्वनं काश्चन किङ्किणीनाम् ।
प्रत्युद्व्रजन्तीव रणमुत्पतन्त्यो गोदावरीसारपंक्त्यस्त्वाम् ।।[2]

सिन्धु नदी – महाकवि ने सिन्धु नदी को थकावट दूर करने वाली बताया है –

विनीताध्वश्रमास्तस्य सिन्धुतीरविचेष्टनैः ।
दुधुवुर्वाजिनः स्कन्धाँल्लग्नकुंकमकेसरान् ।।[3]

सरयू नदी – महानदी ने राजा अज द्वारा गंगा और सरयू के पवित्र संगम तीर्थ में शरीर त्यागने का उल्लेख किया है । क्योंकि कहा गया है कि इससे स्वर्ग की प्राप्त होती है ।

तीर्थे तोयत्यतिकरभवे जह्नुकन्यासख्यो -
र्देहत्यागादमरगणनालेख्यामासाद्य सद्यः ।
वर्णकाराधिकतररूचा संगतः कान्तयाऽसौ
लीलागारेष्वरमत पुनर्नन्दनाभ्यन्तरेषु ।।[4]

नदियों के अतिरिक्त रघुवंश में जल तत्त्व का अनेक रूपों में वर्णन किया गया है ।यथा सरोवर झरने, निर्झर इत्यादि ।

---

1. रघुशंवम्- ९/७२
2. रघुशंवम्- १३/३३
3. रघुशंवम्- ४/६७
4. रघुशंवम्- ८/९५

Scanned with CamScanner

रघुवंश महाकाव्य में महाकवि ने अयोध्या से प्रस्थान कर वन में प्रविष्ट राजा दिलीप और सुदक्षिणा द्वारा सरोवर में तरंग संचालन से शीतल वायु का आनन्द लेने का उल्लेख किया है ।

सरसीष्वरविन्दानां वीचिविक्षोभशीतलम् ।
आमोदमुपजिघ्रन्तौ स्वनि:श्वासानुकारिणम् ।।[1]

रघुवंश महाकाव्य में महाकवि ने गिरी-निर्झरों से जलकणों से युक्त वायु द्वारा पर्वतीय क्षेत्र के अभिधान का उल्लेख किया है –

पृक्तस्तुषारौर्गिरिनिर्झराणामनोकहाकम्पितपुष्पगन्धी ।
तमातप कलान्तमनातपत्रमाचारपूतं पवन: सिषेवे ।।[2]

इस प्रकार महाकवि कालिदास ने अमर काव्य में अमरसिन्धु (गङ्गा), कपिशा नदी, कावेरी नदी, मुरला नदी, नर्मदा नदी, शिप्रा नदी, यमुना नदी, तमसा नदी, गोदावरी नदी, सिन्धु नदी, सरयू आदि नदियों का वर्णन किया है । नदियां हमारे राष्ट्र की धरोहर है । नदियों को प्रदूषित होने से बचाना सभी नागरिकों का परम कर्त्तव्य है । नदियों की रक्षा आत्म रक्षा है । महाकवि कालिदास ने यह संदेश दिया है कि पर्यावरण का संकट सभ्यता का संकट है । महाकवि कालिदास आज भी जन मानस में रटे बसे हैं ।

प्रो. अर्चना दुबे
श्रीसोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय
राजेन्द्र भुवन रोड़, वेरावल,
जिला गीर सोमनाथ, गुजरात-362265

:::::

1. रघुशंवम्- १/४३
2. रघुशंवम्- २/१३

Scanned with CamScanner